ISSN No. : 2394-0344 Remarking : Vol-2* Issue-3*August 2015

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख बिन्दु–अशिक्षा, लिंगभेद और रूढ़िवादी सोच

मनीषा कुमारी
सहायक प्राध्यापिका,
गृह विज्ञान विभाग,
के.एन.जी. पी.जी. कालेज,
भदोही

सारांश

मालिक रूप स भारतोय समाज एक पुरूष पधान समाज रहा ह। इस पुरूष पधान समाज क कारण महिलाआ का हमशा यहा दायम दज का स्थान हो पाप्त हआ ह आर पुरूष शासक एव महिला शाषित बनकर रह गइ ह। भारत म महिलाआ को स्थिति न पिछलो कछ सदिया म परिवतना का सामना किया ह। महिलाआ का इतिहास भारत म, पाचोन काल म पुरूषा क साथ बराबरो को स्थिति स लकर मध्ययुगोन काल क निम्न स्तरोय जोवन आर कालान्तर म कइ समाज सधारका द्वारा समान अधिकारा का बढावा दिए जान तक, काफो गतिशोल रहा ह। उनक पास किसर भो पकार को स्वतत्रता नहो हान क कारण उनको सामाजिक, आथिक आर जोवनगत स्थिति एक पराश्रित स अधिक आर कछ नहो थो, जिस हर कदम पर एक पुरूष क सहार को जरूरत पडतो थो। पस्तत शाध पत्र म गामोण नारो जोवन को समस्याआ पर पकाश डालन क साथ हो साथ उन तथ्या पर भो पकाश डाला गया ह जा कि महिलाआ को दशा सधारन म सहायक हा सकत ह।

मुख्य शब्द : महिला विकास, लिगभद, महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए मापदण्ड का आधार वहाँ का समाज होता है। समाज की अभिन्न इकाई है– घर–परिवार तथा घर–परिवार की धुरी है, गृहिणी। गृहिणी के अभाव में घर की कल्पना अपूर्ण हैं।

एक चीनी कहावत है कि 'जब आप एक पुरुष को शिक्षित करते है तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है किन्तु जब आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं तो पूरा परिवार एवं उसका परिवेश शिक्षित होता हैं।'

पंडित जवाहर लाल नेहरू के ये शब्द, ''जब स्त्रियाँ आगे बढ़ती है तो परिवार आगे बढता हैं, गाँव आगे बढ़ते हैं और राष्ट्र भी अग्रसर होता हैं।''

यह एक सर्वसम्मत तथ्य है कि जब महिलाएँ विकास की मुख्य धारा में होंगी, तभी हमारा सामाजिक–आर्थिक विकास सार्थक होगा। कृषि में संलग्न श्रम–शक्ति का 50 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं का है और वे भारतीय कषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ऐसे में अगर ग्रामीण महिलाओं को कृषक महिलाएँ कहा जाए तो बेहतर होगा। कृषक महिलाओं की भूमिका को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है:

1. मजदूरी पर कार्य करने वाली महिलाएँ।
2. अपनी जमीन पर बिना मजदूरी के काम करने वाली कृषक महिलाएँ।
3. खेती–बाड़ी से सम्बन्धित किसी खास काम की देखरेख करने वाली प्रबंधक श्रेणी की महिलाएँ।

भारत में रोजगार में महिलाओं की स्थिति की एक विडंबना यह है कि ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएं जो घरेलू या खेती–बाड़ी, पशुपालन, ईंधन बटोरने तथा कुटीर उद्योगों की गतिविधियों जैसे काम संभालती है उनका आर्थिक मूल्यांकन नहीं होता और उन्हें रोजगार की श्रेणी में नहीं रखा जाता। फिर भी संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं की आबादी लगातार बढ़ रही हैं।

2001 की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक देश में रोजगारपरक लोगों की संख्या 40 करोड़ थी जिनमें 27.54 करोड़ पुरूष और 12.70 करोड़ यानी एक तिहाई से भी कम महिलाएं थी। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत 31.06 करोड लोगों में पुरूषों तथा महिलाओं की संख्या क्रमशः 19.92 करोड़ और 11.14 करोड़ थी। शहरों में 9.18 करोड़ के रोजगार शुदा लोगों में पुरूषों की संख्या 7.62 करोड़ और महिलाओं की 1.15 करोड़ थी। ये आंकड़े स्पष्ट

करते है कि गॉवों में रोजगार के अवसर अधिक है और वहां कामकाजी महिलाओं की संख्या का अनुपात शहरों की तुलना में अधिक है। किन्तु यहां यह याद रखना जरूरी है कि गॉवों में महिलाओं के रोजगार और उनकी मजदूरी का स्तर काफी नीचे रहता है। अधिकतर औरतें अशिक्षित और अकुशल होने के कारण श्रम आधारित काम करती हैं और उन्हें वेतन देने के मामलें में भी भेदभाव बरता जाता हैं।

इस पुरूष प्रधान समाज के कारण पुरूष शासक एवं महिला शोषित बनकर रह गई हैं। नारियों के संबंध में समाज में प्रचलित अवधारणाओं के कारण भी इनकी स्थिति कमजोर हुइ हैं। भूमि के स्वामित्व, उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण तथा निर्णय लेने की शक्ति पुरूषों के हाथों में होने के कारण महिलाएं आर्थिक रूप से पुरूष को देवता, अन्नदाता एवं स्वामी मानती हैं। आर्थिक विषमता के परिणामस्वरूप स्त्री–पुरूष के मध्य अंतर उत्पन्न हुआ है और महिलाओं की इस स्थिति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं मौलिक कारण है– पुत्र प्राप्ति की लालसा। पुत्र को परिवार का उत्तराधिकारी, वंशबेल, संपत्ति का रखवाला एवं कुलदीपक माना जाता है।

इसी मानसिकता के कारण स्त्रियां युगों–युगों से शोषित होती चली आ रही हैं, पुरूष महिला विरोधी मानसिकता, सामाजिक व्यवस्था, अर्थतंत्र, धार्मिक व्यवस्था, सांस्कृतिक तंत्र, प्रशासन एवं राजनीतिक व्यवस्था पर वर्चस्व स्थापित किए हुए हैं तथा महिलाएं पुरूषों पर निर्भर हैं। पुत्र की लालसा ने पुत्रियों को संपत्ति, जमीन, जायदाद, शिक्षा, पोषण, चिकित्सा सुविधाओं इत्यादि से वंचित किया है। यही कारण है कि हमारे देश में कन्या भ्रूण हत्या का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। भारतवर्ष में प्रतिवर्ष पांच लाख कन्या भ्रूणों की हत्या कर दी जाती है। 1986 से 2006 के अंतराल में लगभग एक करोड़ कन्या भ्रूणों की कोख में हत्या की गई है। भारत में स्त्री–पुरूष लिंगानुपात में अंतर का सर्वाधिक अहम कारण गरीबी एवं पुत्रों का अत्यधिक महत्व है। यहां प्रतिवर्ष पैदा होने वाली 15 लाख बच्चियों में से लगभग 1.5 लाख बच्चियां अपने प्रथम जन्मदिन से पूर्व तथा लगभग 25 प्रतिशत बच्चियां 15वा जन्मदिन देखने से पूर्व ही मर जाती है।

गरीबी के कारण लड़कियों की कम खुराक, कम कैलोरी, कुपोषण इत्यादि के कारण युवावस्था भी बुढ़ापे और कमजोरी में बदल जाती हैं। भारत में लगभग 70 प्रतिशत महिलाये एनीमिया से पीड़ित हैं। दलित, जनजातीय एवं पिछड़ी जातियों की महिलाओं की स्थिति संपन्न वर्गों एवं जातियों की महिलाओं से भी बदत्तर है। मातृत्व मृत्युदर का चिकित्सा एवं सामाजिक कारणों से घनिष्ठ संबंध है। महिला मृत्युदर अधिक होने से भी लिंगानुपत में असंतुलन उत्पन्न होता है। महिलाओं की संख्या में गिरावट के कारण यौन हिंसा, बाल शोषण, पत्नियों की अदला–बदली, बच्चियों का यौन उत्पीड़न इत्यादि मामलें बढ़े है। लड़कियों की खरीद–फरोख्त के मामले भी बढ़े है।

महिलाओं की साक्षरता दर पुरूषों के मुकाबले बहुत कम हैं। गरीब बालिका क लिए आज भी शिक्षा की अपेक्षा पेट की भूख को मिटाने के लिये काम करने को प्राथमिकता दी जाती है। केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा लड़कियों की शिक्षा हेतु कई नीतियों एवं परियोजनाओं के बावजूद 2011 की जनगणना के अनुसार 36 प्रतिशत महिलाएं अशिक्षित पाई गई। भारत में लड़कियों की अशिक्षा के मूल कारणों में सामाजिक नियमों का लड़कियों के विरूद्ध होना प्रमुख हैं। पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक कार्य करती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं लगभग दिनभर काम करती हैं। जबकि पुरूष 4 या 5 घंटे कार्य करते है। परंतु महिलाओं के कार्यों को 'अदृश्य कार्य' कहा जाता है। अधिक कार्यबोझ के कारण महिलाओं को शारीरिक एवं मानसिक थकावट, कम नींद, मानसिक तनाव आदि परेशानियों से जूझना पड़ता है।

ऐसा माना जाता है कि आधुनिक आर्थिक युग में महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिये उनका आर्थिक विकास पूर्ण रूप से होना चाहिए। आर्थिक विकास से तात्पर्य हैं कि महिलाओं का जीवन–निर्वाह के लिये जिन मूलभूत आवश्यकताओं की (आहार, कपड़ा, आवास, आरोग्य, शिक्षा आदि) जरूरत होती हैं, वे मानवीय गौरव व मूल्यों को कायम रखते हुए प्राप्त हो। महिलाये आत्मनिभरता व स्व सम्मान से जीवन व्यतीत कर सके। आज भारत में ऐसी महिलाओं की संख्या बहुत अधिक हैं, जिन्हें जीवन जीने के लिये बहुत ही संघर्ष करना पड़ता है। अधिकांश रूप से उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसका मूलभूत कारण हैं कि महिलाओं के सामाजिक व शैक्षणिक स्तर का निम्नस्तरीय होना। कई अध्ययनों से यह जानकारी मिली है कि ''महिलाएं कुल काम का 2/3 भाग करती है, फिर भी उन्हें गरीबी का जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है– क्योंकि महिलाओं के कई कार्यों में प्रत्यक्ष आमदनीं नहीं होती है जैसे– घर का काम, बच्चों को पालने का काम, परिवारिक स्वजनों की सेवा का काम आदि ऐसे कई अनौपचारिक किन्तु महत्वपूर्ण कार्य महिलाएं करती हैं, जिसका आय प्राप्ति से सीधा सम्बन्ध नहीं होता।''

विश्व में विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की रोजगार प्राप्ति की स्थिति अलग–अलग है। उत्तरी अमेरिका मे केवल 38 प्रतिशत महिलाएं प्रत्यक्ष आय प्राप्त करने के रोजगार से जुड़ी हुई है। पश्चिमी यूरोप में 35 प्रतिशत महिलाएं, एशिया में 34 प्रतिशत महिलाएं, ओसेनिया में 33 प्रतिशत महिलाएं व लेटिन अमेरिका में केवल 24 प्रतिशत महिलाएं रोजगार प्राप्ति में स्थान रखती ह, जबकि ऐसा कहा जाता है कि महिलाएं विश्व के कुल काम का 2/3 भाग कार्य करती है, लेकिन रोजगार प्राप्ति में उनका प्रतिशत बहुत कम दिखायी देता है। इससे स्पष्टतः ज्ञात होता है कि काम करने के क्षेत्र में महिलाओं के श्रम का शोषण किया जाता है, और काम के बोझ के अनुसार उन्हें आय का हिस्सा प्राप्त नहीं होता।

भारत में, कृषि में महिलाओं की संख्या बढ़ती जा रही हैं। इसका एक मुख्य कारण यह है। कि दिहाड़ी वाले रोजगार की तलाश में गॉवों के पुरूष शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। जिसके कारण परिवार की समस्त जिम्मेदारियों का निर्वहन महिलाओं को उठाना पड़ता है। बच्चों की परवरिश से लेकर बुजुर्गों की सेवा करना तथा घरेलू कार्यो के साथ–साथ कृषि के सभी कार्यों का करने की जिम्मेदारी भी महिलाओं पर हो जाती है परिवार की आर्थिक मजबूती के लिये उन्हें बाहर मजदूरी भी करना पड़ता है। इस तरह ग्रामीण महिलायें अत्यधिक काम के

बोझ से दबी है जिसके कारण उनका स्वास्थ्य सबसे ज्यादा प्रभावित होता है वे एनीमिया एवं कुपोषण से ग्रसित हो जाती है जिसका कारण उनका अत्यधिक कार्य के बोझ से दबा होना हैं।

देश की राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान करीब एक तिहाई है। कृषि में महिलाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है और खेती महिलाओं की गतिविधि बनती जा रही है। सरकारी अनुमान के अनुसार देश के खेतिहर मजदूरी और स्वरोजगार में लगे लोगों में लगभग आधी संख्या महिलाओं की है। ग्रामीण क्षेत्रों की कुल महिला मजदूरों का 89.5 प्रतिशत खेती तथा इससे सम्बन्धित औद्योगिक क्षेत्रों में लगा हैं।

कृषि उत्पादन में महिलाओं का औसत योगदान कुल मेहनत के 55 से 66 प्रतिशत तक होता है। उनकी भागीदारी कितनी अधिक है, इसका अनुमान हिमालय क्षेत्र में कराए गए एक अध्ययन से लगाया जा सकता है। इस इलाके में एक एकड़ खेत में बैलों की एक जोड़ी साल में 1,064 घंटे, एक पुरूष 1,212 घंटे और एक महिला 3,485 घंटे कार्य करती है।

कृषि और कृषि–आधारित ग्रामीण उत्पादन में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद ये महिलाएं उपेक्षित है। वे जो आमदनी पाती हैं, वह उनके द्वारा किये कार्य के समतुल्य नहीं होती। खेतिहर मजदूरों में भी महिलाओं का अनुपात लगातार बढ़ रहा है और शीघ्र इसके एक तिहाई से बढ़कर 50 प्रतिशत पार कर जाने का अनुमान है मगर महिला खेतिहर मजदूरों की स्थिति गंभीर तो है ही, दयनीय भी हैं। उन्हें पुरूषों की तुलना में कम मजदूरी पर दिन–रात खेतों में काम करना पड़ता है। एक अध्ययन के अनुसार अर्जित आय में महिलाओं का हिस्सा सिर्फ 25.7 प्रतिशत होता है। उनकी मुख्य समस्याएं हैः लम्बे समय तक कड़ी मेहनत, कम उत्पादकता; नई तकनीक तक पहुंच न होना; कम मजदूरी पर या पारिवारिक मजदूर की तरह काम करना; भूमि, ऋण, पानी, खरीद–फरोख्त और प्रबंधन जैसे संसाधनों तक पहुंच और नियंत्रण कम होना; स्त्री–पुरूष असमानता पर आधारित प्रसार सेवाएं; प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध न होना बहुआयामी भूमिका निशाने के लिये सहायक सेवाओं की कमी, स्त्री–पुरूष भेदभाव पर आधारित मजदूरी दरें; स्वास्थ्य के लिये हानिकारक व्यावसायिक जोखिम महिलाओं के स्वास्थ्य को आर्थिक स्तर को प्रभावित कर रहा है।

अन्त में किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के मापदण्ड का आधार वहां का समाज होता है। समाज की अभिन्न इकाई है– घर–परिवार तथा घर–परिवार की धुरी है, गृहिणी।

इस प्रकार एक स्वस्थ गृहिणी ही स्वस्थ परिवार, समाज, राष्ट्र का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

एक 'मकान' को 'घर' बनाने में स्त्री की भूमिका प्रमुख है। अंग्रेजी में एक कहावत हैं–

"A House is built by hands
but a home is built by hearts."

अर्थात् एक मकान हाथों से निर्मित हाता हैं, किन्तु घर का निर्माण हृदय द्वारा होता है।

घर की प्राणवायु गृहिणी हैं इसलिये गृहिणी का स्वस्थ होना जरूरी हैं क्योंकि स्वस्थ गृहिणी स्वस्थ परिवार की नींव रखेगी और स्वस्थ युवा पीढ़ी की कर्णधार बनेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.google.com
2. सिंह डॉ0 अनीता : आहार एवं पोषण विज्ञान, स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा, प्रथम संस्करण, 2014–15, पृष्ठ सं0–104–112, 331–337
3. Effects of a food-based intervention on markers of micronutrients status among Indian woman of low socio-economic status (Br. J. Natr. 2015)
4. Changing dietary patterns in the conadian Arctic : Frequency of consumption of food and beverager by inusif in three Nunavut communities (Food Nutr. Bull. 2014)
5. सिंह, डॉ0 श्रीमती बृन्दा : आहार विज्ञान एवं पोषण, पंचशील प्रकाशन नवम् संस्करण, जयपुर, 2011
6. Adequacy of dietary intakes and poverty in India : Trends in the 1990. (Econ Hum Biol. 2008) Mahal A, Karan A. K., Econ Hum Biol. 2008 March, 6 (i) 57-74
7. कुरूक्षेत्र : ग्रामीण गरीबी और रोजगार, मासिक अंक फरवरी, 2008, पृष्ठ संख्या–8–9
8. Public Health Natr. 2007, Mar, 10 (3) : 245-51
9. Bamji, S. Mahtab, Rao Pralhad. N & Reddy Vinodini; Human Nutrition : Second Edition, Published by Vijay Primlani for Oxford & IBH Publishing Co. Pvt. Ltd., D-16 Connaught Place, New Delhi, 2003, Page No.-153-169
10. Srilakshmi. B : Dictetics; New Age International (P) Limited, Publishers, New Delhi. Bangalore. Chennai. Guwahati. Hyderabad. Kolkata. Lucknow. Mumbai, Fourth Edition, 2002, Page No. 15-19
11. Lal Bagh, Chetana : Woman and Development in 7 Vols. Discovery Publication, New Delhi, 1991.
12. योजना : जून 2012, पृष्ठ सं0–11, पृष्ठ सं0–44
13. योजना : अक्टूबर 2006, जेंडर बजटिंग, पृष्ठ सं0–7
14. शैरी जी0 पी0 : पोषण एवं आहार विज्ञान; सत्रहवें संस्करण, दयालबाग, आगरा, 1971, पृष्ठ संख्या–5–12
15. सा शीला जय : प्रसार शिक्षा एवं संचार, 2000, पृष्ठ सं0–222 से 223
16. बख्शी, बी0 के0 : आहार एवं पोषण विज्ञान; विनोद पुस्तक मन्दिर नवीनतम् संस्करण, आगरा, पृष्ठ संख्या–5–7
17. Ghandially, Rachana: Women in Indian Society, Saga Publication, India Pvt. Ltd. New Delhi, 1988
18. Social Welfare: Central Social Welfare Board, New Delhi.
19. Gupta Amim Kumar : Women and Society, The development